समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
की हिंदी विषय में पीएच०डी० उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का अति संक्षिप्त शोध सारांश

शोध निर्देशक:

डॉ० विश्वम्भर पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
एस०डी० (पी०जी०) कॉलेज,
मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)

शोधार्थी:

ललित कुमार सारस्वत
एम०ए०, बी०एड०,
एम०फिल०, यू०जी०सी० नेट,
स्लेट (उत्तराखण्ड)

हिंदी विभाग
एस०डी० (पी०जी०) कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)
2021

समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श

अति संक्षिप्त शोध-सार

समकालीन कविता में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, पर्यावरण विमर्श सहित अन्य अनेक विमर्श दृष्टिगोचर होते हैं। दलित विमर्श समकालीन हिंदी कविता अपना वर्ण्य विषय बनाती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता 'ठाकुर का कुँआ' में दलितों की इस त्रासदी का चित्रण है।

वर्तमान परिवेश की पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे- ओजोन परत का क्षय, ग्लेशियरों का पिघलना, प्रदूषित जल, वृक्ष कटान, भूस्खलन, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवनशैली के बारे में पुनर्विचार के लिये प्रेरित कर रही हैं। मनुष्य वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से अपने द्वारा किए गए परिवर्तनों से नुकसान को कितना कम करने में सक्षम है? यह आज के पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अहम प्रश्न हैं। मनुष्य के जीवन के लिए शुद्ध पर्यावरण का होना अति आवश्यक है। बगैर स्वच्छ पर्यावरण के स्वस्थ जीवन जी पाना मुश्किल है।

शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय पर्यावरणीय चेतना और समकालीन कविता का अंतः संबंध है। इसके अंतर्गत पारिस्थितिकी एक प्राकृतिक इकाई है, जिसमें एक क्षेत्र विशेष के सभी जीवधारी, अर्थात् पौधे, जानवर और अणुजीव शामिल होते हैं। जो कि अपने जैव- अजैव पर्यावरण के साथ अंतर्क्रिया करके एक संपूर्ण जैविक इकाई बनाते हैं। कविता और पारिस्थितिकी में कभी नहीं समाप्त होने वाला अंतरसंबंध है। मौसम में हो रहे अनचाहे परिवर्तनों से पर्यावरण की पारिस्थितिकी प्रभावित हो रही है। प्रकृति में इसके फलस्वरूप ही अजब- गजब परिवर्तन हो रहे हैं। **'इतने दिनों से कोई फूल नहीं देखा'** शीर्षक से प्रस्तुत कविता में समकालीन कवि विजेंद्र ने इस पारिस्थितिकी के

बिगड़ने से फल- फूलों की प्रभावित हो ही प्राकृतिक अव्यवस्था पर इस प्रकार चिंता व्यक्त की है।

हवा की तरह आधुनिक कविता मे पानी अर्थात जल के संबंध में भी कवियों ने पर्याप्त चिंतन मनन कर मनुष्य को इसकी उपयोगिता के विषय में अनेक स्थलों पर जागरूक करने का प्रयास किया है। एक तरफ बुद्धिजीवी वर्ग जल की शुद्धता और सुरक्षा के लिए अभियान चला रहा है। दूसरी तरफ उपभोक्तावादी दृष्टिकोण के समर्थक जल के अवैध दोहन और जल के प्रदूषण से स्वयं को नहीं बचा पा रहे हैं। रमेश मयंक की कविता **'नदी माँ का दुलार'** में कवि ने जल के प्रदूषण को रोकने के लिए हम सभी के समक्ष एक प्रश्न खड़ा किया है।

पर्यावरणीय संतुलन मानवजनित और प्रकृतिकजनित दोनों कारणों से प्रभावित हो रहा है। चेर्नोबिल परमाणु विस्फोट, हिरोशिमा- नागासाकी बम विस्फोट, भोपाल गैस त्रासदी, चीन की बाढ़ और उत्तराखंड में बादल फटने की घटनाएं पर्यावरणीय अंसतुलन की प्राकृतिक और मानवजनित बड़ी घटनाएँ हैं। आधुनिक युग में मनुष्य के समक्ष अनेक चुनौतियाँ और संकट हैं। जीवन की विभिन्न विषमताओं के चलते जीवनभर मनुष्य अपने मुश्किलों के दिन को भूल नहीं पाता है। एकाकीपन में वह पुरानी स्मृतियों को याद कर उन्हें भूलने का प्रयास करता है। मंगलेश डबराल की कविता **'चुपचाप'** में एकाकी जीवन का चित्रण किया गया है।

समकालीन कवि जसवीर त्यागी ने अपनी कविता 'पेड़' में यह मनुष्य जाति को चेताया है कि मनुष्य जाति को वस्त्र, आशियाना और अन्य प्रकार की सामग्री वृक्षों ने दी फिर भी वह वृक्षों का कटान कर अंधाधुंध दोहन कर रहा है। इस संबंध में कवि का यह ध्यानाकर्षण वृक्षों के महत्व को रेखांकित करता है।

प्राकृतिक जल स्रोतों पर मुनाफाखोरी प्रवृत्ति के चलते नामी- गिरामी कंपनियों ने कब्जा कर लिया है। कुएँ सूख रहे हैं। नदियों और झरनों से झर- झर करता पानी जैसे सात समुंदर पार से आई संस्कृति की तरह बंद बोतलों में सिमट गया है।

समकालीन कवि सदानंद शाही ने अपनी कविता **'कुँए सूखते चले गए'** में मुनाफाखोरों की कारगुजारियों से उत्पन्न जल संकट पर अपनी गहरी पीड़ा प्रकार व्यक्त की है।

बहुराष्ट्रीय कंपनी और निगमों द्वारा जल स्रोतों पर कब्जा करने के प्रयास जारी हैं। जलापूर्ति के लिए शीतल पेय कंपनियों का खूब प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। टेलीविजन पर महंगे विज्ञापन प्रसारित हो रहे हैं। निजी कंपनियाँ शीतल पेय के लिए मनुष्य की प्राकृतिक लालसा की नई की नई परिभाषाएँ गढ़ रही हैं। समकालीन कवि प्रेम शंकर शुक्ल ने **'पानी का मतलब'** कविता में मानव जीवन में गहरे तक पैठ कर रही व्यवस्था को व्यक्त किया है।

प्रकृति में पड़ा अकाल किसान और मजदूरों की मौत की तरह है। अकालग्रस्त क्षेत्र घोषित होने पर खूब हो- हल्ला मचता है पर अकाल से लड़ने और उसका सामना करने वाली स्थिति पर चिंता व्यक्त नहीं की जाती। कवि लीलाधर मंडलोई की कविता 'गाने' में अकाल की स्थिति का वर्णन कवि ने किया है।

ललित कुमार सारस्वत